पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

मानसिक बल एक महत्वपूर्ण शक्ति है। इस धरती पर जो कुछ हम देख रहे हैं, वह सब मानसिक शक्ति का पसारा है। मानसिक बल सभी मनुष्यों में होता है। मानसिक बल हीनता एवं महानता दोनों व्यक्ति के स्वभाव में है। मानसिक बल को विकसित करने के लिये पहले छोटे-छोटे लक्ष्य बनाओ। B.A करना, M.A करना, Ph.D करना। बड़े लक्ष्य बना लेने पर सफलता न मिलने से हताश हो जाते हैं। प्राय: लोग अपने से बड़े, आस-पड़ोस और उस समाज के व्यक्तियों के आचरण का ही अनुसरण करते रहते हैं और उतने ही क्षेत्र में विचार उठते रहते हैं। इससे मनुष्य के जीवन में कोई विशेषता नहीं आती। मन को संकल्प पूर्वक किसी एक कार्य में लगा दें, तो उसमें समुद्री ज्वारभाटा की तरह इतनी शक्ति आ जाती है कि वह असम्भव कार्य कर जाता है। मन में उठने वाली इन विचार तरंगों को नियंत्रण में रखो। निरंतर उठने वाले अच्छे व बुरे विचार जैसे भी होंगे, वैसे ही तत्व वह सूक्ष्म जगत से आकर्षित करते रहेंगे। यदि कुविचारों में ही मन रस लेता रहे तो बुरा स्वभाव पक्का हो जायेगा। मनुष्य अपना नैतिक पतन तो करता ही है, औरों का भी पथ भ्रष्ट करने के निमित्त बन जाता है। जगत के सम्पर्क में रहने से वासना एवं तृष्णा का उठना स्वाभाविक है।

मन को स्थूल भोगों में ही अधिक सुख मिलता है। इन हीन विचारों के कारण मन

मन को संकल्प पूर्वक किसी एक कार्य में लगा दें, तो उसमें समुद्री ज्वारभाटा की तरह इतनी शक्ति आ जाती है कि वह असम्भव कार्य कर जाता है।

चंचलता, अस्थिरता में फँसा रहता है। इस उलझन में न भौतिक उन्नति होती है न आध्यात्मिक। अनियंत्रित मन अभी खाना, अभी पानी, अभी घर, अभी दुकान, अभी रेल, अभी मोटर सब बातें एक साथ करना चाहता है। ये सब प्रलोभन है। बुरा मन असंख्य धन, कभी विद्वान, कभी पहलवान, कभी नेता, कभी योग भोगने की योजनाएं बनाता है। मन को प्रलोभनों की ओर झुकने न दिया जाये। मन को एक ही लक्ष्य की ओर प्रेरित करने से महानता विकसित होने लगती है। निराशा, चंचलता, ईर्ष्या, द्वेष, कुढ़न, चिड़चिड़ापन आदि से मानसिक शक्तियों का पतन होता है। मित्रों, मन को वश में करने के लिये उसे निरंतर सकारात्मकता से भरे पावरफुल विचारों में रखो। मन में ज़्यादातर वही इच्छाएं उठती हैं जो तत्काल या अल्पकाल सुख देती हैं। जितना सुख-साधनों का चिंतन करते हैं, उससे ज़्यादा अध्यात्म चिंतन करो। सदा अच्छे चिंतन में मन को लगाये रखो। मन एक अजीब भूत है। अपनी कल्पना के सहारे आकाश-पाताल और लोक लोकांतर में उड़ता रहता है। इसे निरंतर कार्य में लगाये रखें। तभी यह कमाल कर सकता है। कभी भी किसी को अभागा, चोर, आलसी नहीं कहो। सदा उन्हें अच्छे सम्बोधनों से पुकारो। हर व्यक्ति एक दूसरे से कुछ चाहता है। वह इस आशय से मैत्री करता है कि इससे कुछ मिलेगा। अगर कुछ नहीं मिलता तो लोग साथ छोड़ जाते हैं। सदा दूसरों को प्यार दो, उत्साह दो, मान दो, सम्मान दो, शुभ भाव दो। शक्तिशाली विचार दो। ईश्वरीय सकाश दो।

दिल्ली-मंडावली। सेवाकेन्द्र में आने पर उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुनीता तथा ब्र.कु. जगरूप।

ज्ञानसरोवर। ब्रह्माकुमारीज़ के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा आयोजित 'ज्ञान-विज्ञान का प्रकाश परम्परागत कृषि और ग्राम विकास' विषयक सम्मेलन में दीप प्रज्वलित करते हुए सदाभाऊ खोत,कृषि, बागवानी एवं विपणन राज्यमंत्री,महा., संतोष जोशी,उपाध्यक्ष,मध्य प्रदेश गौपालन और पशु संवर्धन बोर्ड,भोपाल, डॉ. ए.के. मिश्रा,कुलपति,जी.बी.पंत यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रिकल्चर एंड टेक्नोलॉजी,पंतनगर, ब्र.कु. करुणा,ब्र.कु. राजू,ब्र.कु. बद्री विशाल,असिस्टेंट डायरेक्टर, ब्र.कु. डॉ. निर्मला, ब्र.कु. चक्रधारी, ब्र.कु. सरला, ब्र.कु. तृप्ति तथा अन्य।

सिरसागंज-उ.प्र.। 'जीवन का आधार श्रीमद्भगवद् गीता का सार' कार्यक्रम के उद्घाटन पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. उषा, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गीतांजलि, ब्र.कु. अबन्ती तथा अन्य।

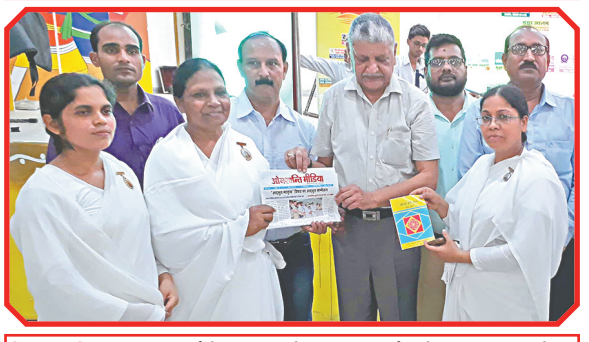

सिवान-बिहार। ज्ञानचर्चा के पश्चात् जे.पी. युनिवर्सिटी के कुलपति हरिकेश सिंह को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका एवं ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. सुधा, ब्र.कु. गायत्री, तथा ब्र.कु. रिन्की।

भीलवाड़ा-राज.। ईद के अवसर पर जमात-ए-इस्लामी हिंद द्वारा आयोजित सद्भावना समारोह में संदेश देते हुए ब्र.कु. इन्द्रा। मंचासीन पूर्व नगर परिषद सभापति ओम नारानीवाल, कवि रशीद निर्मोही, समाज सेवक भंवर मेघवंशी, जयपुर मानव संसाधन प्रदेश सहसचिव नासिर हसन, संत गोपाल दास, केंद्रीय सलाहकार समिति दिल्ली के सदस्य मुसददिक मुदीन, फादर माईकल जी व ब्र.कु. अनिता।

आगरा-ईदगाह। अंतरर्राष्ट्रीय योग दिवस पर डॉ. बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. अश्विना।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-21(2017-2018)

1			■	2		3	■	4	5
	■	■	6	■	■		■	7	
8		9		■	10	■	11	■	■
■	■		■	12		■	13		
14			15	■		■	■	■	■
	■	■	16		■	■	17	18	
19	20		■	■	21	22	■		■
■		■	23	24	■		■	25	26
27		■	28		■		■	29	
	■	30		■	■	■	■	■	

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ पेपर पर उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज़्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजेताओं की लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

1. लेखा-जोखा, आय-व्यय का ब्योरा (3)
3. मानचित्र, तस्वीर, चित्र (2)
4. ...की भाषा जो समझे, चुप (2)
5. दलील, बहस, वाद-विवाद (2)
6. शरीर...है,आत्मा रथी है (2)
9. जो भगवान में विश्वास न रखता हो (3)
10. विचार, सोच, मन का काम है...करना (3)
11. निरन्तर बाप को...करना है, योग (2)
14. फिकर से... कींदा स्वामी, चिंता (3)
15. सभी को... बाप का परिचय देना है, एक संख्या (2)
18. उलाहना, ग्लानि (4)
20. घूस, उत्कोच (3)
22. ...अपने साथ है डरने की क्या बात है, भगवान, परमात्मा (3)
23. ऋण चुकाने में असमर्थता, पूर्ण अभाव (3)
24. पुरुष, आदमी (2)
26. दीवार, दीवाल (3)
27. धरा, ज़मीन, धरनी (2)

बायें से दायें

1. आ...का एक कदम बढ़ा, साहस (3)
2. जो ओटे सो.... (3)
4. मृत्यु, इन्तकाल (2)
7. दोजक, जहन्नुम (2)
8. भक्ति मार्ग के चार धाम में से एक (4)
12. गरीब, भिखारी (2)
13. मुखड़ा देख ले प्राणी ज़रा...में, आईना (3)
14. माया के वशीभूत हो बच्चे बाप को भी...दे देते हैं (4)
16. नई दुनिया में जाने का श्रेष्ठ ...रखना है, लत (2)
17. प्रेमी, प्रेम करने वाला, दिल फेंक (3)
19. महिमा, महत्व, अहंकार (3)
21. कपास, तूल (2)
23. बचपन के...भुला न देना, दिवस (2)
25. अगर, जो (2)
27. बीता हुआ, अतीत (2)
28. हमला, आक्रमण (2)
29. लोहे का गोलाकार छोटा छिछला टुकड़ा, रोटी पकाने का साधन (2)
30. माया ने तुम्हारी बुद्धि को गॉडरेज का...लगा दिया था (2)

- ब्र.कु. राजेश,शांतिवन